प्रत्यय

जो शब्दांश किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ को बदल देते है और नए अर्थ का बोध कराते है उसे प्रत्यय कहते हैं।

जैसे– मिल+आवट=मिलावट
पढ़+आकू=पढ़ाकू
झूल+आ=झूला

प्रत्यय के भेद–

1. कृत प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

कृत प्रत्यय–वे प्रत्यय जो धातु अथवा क्रिया के अन्त में लगकर नए शब्दों की रचना करते हैं उन्हें कृत प्रत्यय कहते है।

कृत प्रतयय के भेदः–

1. कृत वाचक 2. कर्म वाचक
3. करण वाचक 4. भाव वाचक
5. क्रिया वाचक

(1) कृत वाचक–कर्ता का बोध करानें वाले प्रत्यय कृत वाचक प्रत्यय कहलाते है।

जैसे– हार–पालनहार, चाखनहार, राखनहारवाला–रखवाला, लिखनें वाला, घरवाला

(2) कर्म वाचक कृत प्रत्यय–कर्म का बोध करनों वाले कृत प्रत्यय कर्म वाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– औना–खिलौना
नी–ओढ़नी, मथनी, छलनी
ना–पढ़ना, लिखना, रटना

(3) करण वाचक कृत् प्रत्यय–साधन का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय करण वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– अन–पालन, सोहन, झाड़न
नी–चटनी, कतरनी, सूँघनी
ऊ–झाड़ू, चालू
ई–खाँसी, धाँसी, फाँसी

(4) भाव वाचक कृत प्रत्यय–क्रिया के भाव का बोध करानें वाले प्रत्यय भाववाचक कृत् प्रत्यय कहलाते है।

जैसे– आप–मिलाप, विलाप
आवट–सजावट, मिलावट, लिखावट
आव–बनाव, खिंचाव, तनाव
आई–लिखाई, खिंचाई, चढ़ाई

(5) क्रियावाचक कृत प्रत्यय–क्रिया शब्दों का बोध करानें वाले कृत् प्रत्यय क्रिया वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– या–आया, बोया, खाया
कर–गाकर, देखकर, सुनकर
आ–सूखा, भूखा, भूला
ता–खाता, पीता, लिखता

तद्धित प्रत्ययः– क्रिया को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनानें वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– मानव+ता=मानवता
जादू+गर=जादूगर
बाल+पन=बालपन
लिख+आई=लिखाई

(1) कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय–कर्ता का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय कर्त्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

जैसे– आर–सुनार, लुहार, कुम्हार
गर–बाजीगर, जादूगर
ई–माली, तेली
वाला–गाड़ीवाला, टोपीवाला, इमलीवाला

(2) भाववाचक तद्धित प्रत्यय–भाव का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– आहट–कड़वाहट
ता–सुन्दरता, मानवता, दुर्बलता
आपा–मोटापा, बुढ़ापा, बहनापा
ई–गर्मी, सर्दी, गरीबी

(3) सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय–सम्बन्ध का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय सम्बंध वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– इक–शारीरिक, सामाजिक, मानसिक
आलु–कृपालु, श्रद्धालु, ईर्ष्यालु
ईला–रंगीला, चमकीला, भड़कीला
तर–कठिनतर, समानतर, उच्चतर

(4) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय–गुण का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय गुणवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

जैसे– वान–गुणवान, धनवान, बलवान
ईय–भारतीय, राष्ट्रीय, नाटकीय
आ–सूखा, रूखा, भूखा

शेखावाटी मिशन - 100

(5) स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय–स्थान का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

जैसे– वाला–शहरवाला, गाँववाला, कस्बेवाला
इया–उदयपुरिया, जयपुरिया, मुंबइया
ई–रूसी, चीनी, राजस्थानी।

(6) ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय–लघुता का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– इया–लुटिया
ई–प्याली, नाली,बाली
ड़ी–चमड़ी, पकड़ी
ओला–खटोला, संपोला, मंझोला

(7) स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय–स्त्रीलिंग का बोध करानें वाले तद्धित प्रत्यय स्त्रीवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– आइन – पंडिताइन, ठकुराइन
इन– मालिन, कुम्हारिन, जोगिन
नी–मोरनी, शेरनी, नन्दनी
आनी–सेठानी, पटरानी, जेठानी

अन्य प्रत्यय व प्रत्यय युक्त शब्द

ज्ञ – सर्वज्ञ, मर्मज्ञ, अल्पज्ञ, बहुज्ञ, तत्वज्ञ
जा – अर्कजा, शैलजा, गिरिजा
चर– थलचर, नभचर, वनेचर, खेचर, गोचहर, जलचर, उभयचर
कार – स्वर्णकार,चर्मकार, साहित्यकार, कुंभकार, पत्रकार, चित्रकार, रचनाकार
कर – दिनकर, भास्कर, रूचिकार, शुभंकर, भंयकर, सुधाकर, दिवाकर
त्र – सर्वत्र, एकत्र, अन्यत्र
द – जलद, सुखद, दुःखद, नीरद, अम्बुद, पयोद
ज – जलज, अम्बुज, नीरज, अब्ज, वारिज, सरोज, आत्मज, मनोज
धि – जलधि, नीरधि, पयोधि, अम्बुधि, वारिधि
दायी – सुखदायी, कष्टदायी, प्रेरणादायी, दुःखदायी, उत्तरदायी, आनन्ददायी
धर – चक्रधर, गिरिधर, महीधर, मुरलीधर, विद्याधर, गंगाधर मेरू (मेर) – अजमेर, जैसलमेर, बाड़मेर
ल – शीतल, पीतल, मंजुल, उर्मिल
हर – मनोहर, विहनहर , विषहर, दुःखहर, कष्टहर
नेर – बीकानेर, जोबनेर, आभानेर, साँगानेर
पुर – उदयपुर, जयपुर, भरतपुर, जोधपुर
आस्पद –प्रेरणास्पद, हास्यास्पद, संदेहास्पद, विवादास्पद
ऐल – गुस्सैल, बिगड़ैल, रखैल

उर्दू के प्रत्यय

गर – कारीगर, बाजीगर, जादूगर, सौदागर
गी – सादगी, दीवानगी, ताजगी, वानगी
ची – अफीमची, नकलची, तबलची, तोपची, बावरची
दार – जमीदार, वफादार, मालदार, थानेदार, दुकानदार, हवलदार, किरायेदार
गार – रोजगार, यादगार, मददगार, गुनहगार
खोर – घूसखोर, रिश्वतखोर, हरामखोर, चुगलखोर
बाज – चालबाज, दगावाज, नशेबाज, धोखेबाज
नामा– बाबरनामा, हुमायूँनामा, जहाँगीरनामा, सुलहनामा, इकरारनामा
मन्द – जरूरतमन्द, अहसानमन्द, अक्लमन्द
इन्दा – बाशिन्दा, परिन्दा, शर्मिन्दा
गाह – आरामगाह, ईदगाह, ख्वाबगाह, दरगाह
गीर – आलमगीर, राहगीर, जहाँगीर
आना – नजराना, जुर्माना, हर्जाना, दोस्ताना, सालाना
कार – जानकार, सलाहकार
इयत – इंसानियत, खैरियत, हैवानियत
ईन – शौकीन, हसीन, रंगीन, संगीन
दान – पीकदान, खानदान, फूलदान, कूड़ादान
बन्द – कमरबंद, नजरबंद, हथियारबंद, बाजूबंद
साज – जिल्दसाज, घड़ीसाज, जालसाज

अभ्यास प्रश्न

1. 'रसिया' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है–
(मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)
(1) एरा (2) इया
(3) आर (4) ई (2)

2. वे शब्दांश जो किसी शब्द के...................... में लगकर नये अर्थ का बोध करवाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते है।

शेखावाटी मिशन - 100

समास

समास शब्द की व्युत्पति एवं अर्थः–

समास शब्द सम्+आस दो शब्दों के योग से बना है। जिसमें सम् का अर्थ होता है समान/बराबर/पास–पास तथा आस का अर्थ होता है बैठना अर्थात् दो या दो से अधिक पदों का पास–पास आकर बैठ जाना ही समास कहलाता है।

सामान्यतः दो या दो से अधिक पदों के मेल को समास कहा जाता है।

परिभाषा–समसनं समासः– अर्थात् संक्षिप्तीकरण करनें की प्रक्रिया को ही समास कहा जाता है।

जैसे–रेल पर चलनें वाली गाड़ी–रेलगाड़ी

वह जिसका उदर लम्बा है–लम्बोदर

समास के 6 भेद होते हैः–

1. अव्ययी भाव समास 2. तत्पुरूष समास
3. कर्मधारय 4. द्विगु
5. द्वन्द्व 6. बहुव्रीहि

1. अव्ययी भाव समास

1. इस समास का प्रथम पद प्रधान होता है।
2. इस समास का प्रथम पद कोई उपसर्ग/अव्यय शब्द होता है।
3. इस समास से बना समस्त पद भी एक अव्यय शब्द माना जाता है।
4. पुनरावृति वाले शब्द अर्थात् एक ही शब्द के दोहराव वाले शब्दों में भी अव्ययीभाव समास माना जाता है।
5. इस समास के पदों का विग्रह कार्य उपसर्ग व अव्यय के अर्थ के अनुसार किया जाता है।

जैसे– आजीवन–जीवन रहनें तक

आकण्ठ–कण्ठ तक

निडर –डर से रहित/डर के बिना

निर्विवाद–विवाद से रहित/बिना विवाद के

निर्विरोध–विरोध से रहित/बिना विरोध के

यथाक्रम –क्रम के अनुसार

यथावसर –अवसर के अनुसार

यथागति–गति के अनुसार

यथास्थिति–स्थिति के अनुसार

समक्ष–अक्षि के सामने

परोक्ष–अक्षि से परे

सेवार्थ–सेवा के लिए

ज्ञानार्थ–ज्ञान के लिए

लाभार्थ–लाभ के लिए

अनुदिन–दिन पर दिन

दिन भर–पूरे दिन

भरपेट–पेट भरकर

तत्पुरुष समासः–

जिस समास में सामासिक पदों के बीच से कर्म कारक से अधिकरण कारक तक का लोप हो जाता है तथा द्वितीय पद प्रधान होता है उसे तत्पुरूष समास कहते है।

कारक के आधार पर इसके 6 भेद होते है।

कर्मकारक तत्पुरुष समास

जैसे– चिड़ीमार–चिड़ी को मारनें वाला जेब कतरा–जेब को कतरनें वाला

स्वर्ग प्राप्त–स्वर्ग को प्राप्त

विरोध जनक–विरोध को जन्म देने वाला

करण तत्परुष समास

हस्तलिखित–हस्त के द्वारा लिखित

तुलसीकृत–तुलसी के द्वारा कृत

रेखांकित–रेखा के द्वारा अंकित

आँखों देखी–आँखों से देखा हुआ।

कष्ट साध्य–कष्ट से साध्य

सम्प्रदान तत्पुरुष समास

देवालय–देव के लिए आलय

यज्ञशाला–यज्ञ के लिए शाला

हवनसामग्री–हवन के लिए सामग्री

काक बलि–काक के लिए बलि

रंगमंच–रंग के लिए मंच

अनपादान तत्पुरुष समास

रोगमुक्त–रोग से मुक्त

पथभ्रष्ट–पथ से भ्रष्ट

पदच्युत–पद से च्युत

जन्मान्ध–जन्म से अन्धा

शेखावाटी मिशन - 100

भाग्यहीन–भाग्य से हीन

सम्बन्ध तत्पुरुष

मातृभाषा–मातृ की भाषा
राष्ट्रपति–राष्ट्र का पति
कन्यादान–कन्या का दान
पशुबलि–पशु की बलि

अधिकरण तत्पुरुष

कविराज–कवियों में राजा
नरोत्तम–नरों में उत्तम
युद्धरत–युद्ध में रत
गृह प्रवेश–गृह में प्रवेश
आत्म निर्भर–आत्म पर निर्भर

कर्मधारय तत्पुरुष समासः–

जब किसी समासिक पद का प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य हो तो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इस समास के समस्त पद में प्रयुक्त पद विशेषण विशेष्य व उपमान उपमेय होते है।

⇒ इस समास में भी द्वितीय पद प्रधान होता है।
⇒ इस समास में समानाधिकरण तत्पुरुष के नाम से भी जाना जाता है।

निम्नलिखित चार स्थितियाँ होने पर कर्मधारय समास माना जाता है।

1. विशेषण–विशेष्य युक्त पद होनें पर
2. उपमान उपमेय युक्त पद होनें पर
3. रुपक आलंकारिक पद होने पर
4. सु तथा कु उपसर्ग से बना शब्द होनें पर

विग्रह कार्यः– विशेषण विशेष्य होनें पर विशेषण तथा विशेष्य के बीच में है जो शब्द लिख देना चाहिए।

जैसे– नीलोत्पल–नीला है जो उत्पल
नीलगगन–नीला है जो गगन
रक्ताम्बुज–रक्त है जो अम्बुज
कालीमिर्च–काली है जो मिर्च
सत्परामर्श–सत् है जो परामर्श
महासागर–महान है जो सागर
महापुरुष–महान है जो पुरुष
परमात्मा–परम है जो आत्मा
परमेश्वर–परम है जो ईश्वर
अल्पायु–अल्प है जो आयु
दीर्घायु–दीर्घ है जो आयु
अधमरा–आधा है जो मरा
हीनभावना–हीन है जो भावना
अल्पसंख्यक–अल्प है जो संख्या में
बहुसंख्यक–बहु है जो संख्या में
चरमसीमा–चरम है जो सीमा
उड़नखटोला–उड़ता है जो खटोला
उड़नतश्तरी–उड़ती है जो तश्तरी
मन्दाग्नि–मन्द है जो अग्नि
पूर्णांक–पूर्ण है जो अंक
वीरबाला–वीर है जो बाला

उपमान उपमेय वाले शब्दों का विग्रह उपमान के समान है, जो उपमेय।

कमलनयन–कमल के समान है जो नयन
पुण्डरीकाक्ष–पुण्डरीक के समान है जो अक्षि
चन्द्रवदन–चन्द्र के समान है जो वदन
तुषारधवल–तुषार के समान है जो धवल
कुसुम कोमल–कुसुम के समान कोमल
सु उपसर्ग होने पर–सुष्ठु है जो विशेष्य
कु/कद् होने पर–कुस्सित है जो विशेष्य
सुपुत्र–सुष्ठु है जो पुत्र
सुमार्ग –सुष्ठु है जो मार्ग
कुमति–कुत्सित है जो गति
कुकर्म–कुत्सित है जो कर्म
कदाचार–कुस्सित है जो आचरण

द्विगु तत्पुरुष समासः–

जब किसी सामाजिक पद में प्रथम पद कोई संख्यावाची शब्द हो तथा सम्पूर्ण पद किसी समूह का बोध कराता हो तो वहाँ द्विगु समास माना जाता है।

ऐसे पदों का विग्रह करते समय दोनों शब्दों को लिखकर अन्त में समूह/समाहार शब्द लिख देना चाहिए।

द्विगु–दो गायों का समूह
तिराहा–तीन राहों का समाहार
पंचामृत–पाँच अमृतों का समूह

शेखावाटी मिशन - 100

षड्तु–षट् ऋतुओं का समूह
सप्ताह –सात अह्नों का समूह
अठन्नी–आठ आनों का समूह
नवरत्न–नव(नौ) रत्नों का समूह
दशाब्दी–दश शब्दों का समूह
शताब्दी–शत शब्दों का समूह
दशक–दश का समूह
शतक–शत का समूह

द्वन्दव समासः–

जब किसी सामाजिक पद में प्रयुक्त दोनों पद या सभी पद अपनी–अपनी प्रधानता को प्रकट करते है तो उसे द्वन्द्व सामस कहते हैं।

जैसे– माता–पिता– माता और पिता
पति–पत्नी– पति और पत्नी
दादा–दादी–दादा और दादी
कृष्णार्जुन–कृष्ण और अर्जुन
शिवकेशव–शिव और केशव
सुरासुर–सुर और असुर
लाभ हानि–लाभ या हानि
जीवनमरण –जीवन या मरण
घट बढ़–घट या बढ़
नफा नुकसान–नफा या नुकसान

बहुव्रीहि समास

जब किसी समास में प्रयुक्त दोनों पद अपना अर्थ खो देते है तथा उनके स्थान पर कोई अन्य अर्थ प्रकट होता है तो उसे बहुव्रीहि समास कहा जाता है।
इस समास में अन्य अर्थ प्रकट होने के कारण इसमें अन्य पद की प्रधानता मानी जाती है।
इस समास में विग्रह करनें पर प्रायः जो जिसका–जिसकी –जिसके शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

लम्बोदर–लम्बा है उदर जिसका वह (गणेश)
चन्द्रमौली–चन्द्र है मौली पर जिसके वह (शिव)
दशानन–दश है आनन जिसके वह (रावण)
सुग्रीव–सु(सुन्दर) है ग्रीवा जिसकी (वानरराज)
चक्षुश्रवा–चक्षु से श्रवण करता है जो वह (साँप)
चक्रपाणि–चक्र है पाणि में जिसके वह (विष्णु)
वीणापाणि–वीणा है पाणि में जिसके वह (सरस्वती)
चतुर्भुज–चार है भुजाएँ जिसकी वह (विष्णु)
चतुर्मुख–चार है मुख जिसके वह(ब्रह्मा)

शेखावाटी मिशन – 100

मुहावरे

मुहावरा :– मुहावरा शब्द अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है संक्षिप्त कथन अर्थात् ऐसा कथन जो अपना वास्तविक अर्थ प्रकट न करके किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है तो वह मुहावरा कहलाता है।

विशेषः– मुहावरा पूर्ण वाक्य न होकर वाक्यांश होता है।

इसका अर्थ स्पष्ट करने के लिए इसका वाक्य में प्रयोग करना आवश्यक होता है। मुहावरे में लिंग, वचन,काल आदि के अनुसार कुछ परिर्वतन आ सकता है मुहावरा भाषा की लाक्षणिकता दर्शाता है।

सामान्यतः मुहावरे के अन्त में क्रिया सूचक शब्द (ना युक्त शब्द) प्रयुक्त होते है।

मुहावरे **अर्थ**

- ✧ **श्री गणेश करना** – कार्य आरम्भ करना
- ✧ **अंक भरना** – स्नेहपूर्वक मिलना
- ✧ **अक्ल का घोड़े दौड़ाना** –केवल कल्पनाएँ करते रहना
- ✧ **अगर–मगर करना** – बहाने बनाना
- ✧ **अक्ल के पीछे लट्ठ लिए धूमना** –मूर्खतापूर्ण कार्य करनें वाला
- ✧ **अपनी खिचड़ी अलग पकाना**– अपनी बात सबसे अलग रखना
- ✧ **अपना राग अलापना** –अपनी ही बातें करते रहना
- ✧ **अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना** –अपना नुकसान स्वयं करना
- ✧ **अपना सा मुंह देखते रह जाना** – निराश होना
- ✧ **आँख रखना** – निगरानी रखना
- ✧ **आँख की किरकिरी** – अवांछित/व्यवधान डालने वाला व्यक्ति
- ✧ **आँख लगाना** – चौकस रहना / निगाह रखना
- ✧ **आँखें चार होना**– आमना–सामना होना
- ✧ **आँखों में चर्बी छा जाना**–घमण्ड होना
- ✧ **आँखों में खून उतरना**– अत्यधिक क्रोध होना
- ✧ **आँख बन्द होना** – मर जाना
- ✧ **आँखों में सरसों फूलना** – अत्यधिक प्रसन्न होना
- ✧ **आँख बदलना**– विरोध में होना
- ✧ **आँख लड़ जाना** – प्रेम हो जाना
- ✧ **अंग अंग ढीला होना**–बहुत थक जाना
- ✧ **अंगारों पर पैर रखना/चलना** –संकट पूर्ण कार्य करवाना
- ✧ **अंधे के हाथ बेटर लगना**– अयोग्य व्यक्ति को अच्छी वस्तु मिलना स्वस्थ रहना
- ✧ **अन्न लगना** –स्वस्थ रहना
- ✧ **अन्न जल उठना** – एक स्थान पर रहने का संबंध टूटना/ मर जाना
- ✧ **ओस का मोती होना**–शीघ्र नष्ट हो जाने वाला/क्षणभंगुर
- ✧ **बालू की भींत उठाना** – व्यर्थ प्रयास करना
- ✧ **आग लगने पर कुआँ खोदना** – विपत्ति आने पर उपाय खोजना
- ✧ **आटे दाल का भाव मालुम होना** – जीवन के कठिन यथार्थ का बोध होना
- ✧ **आँच न आने देना**– कोई कष्ट उत्पन्न न होने देना
- ✧ **आकाश के तारे तोड़ना**–असंभव कार्य करना
- ✧ **आपे से बाहर होना** – किसी के व्यवहार से उतेजित होकर होश खोना
- ✧ **आसमान टूट पड़ना** – बहुत बड़ी आपत्ति आना
- ✧ **आसन डोलना** – विचलित होना
- ✧ **आँसू पीना** – चुपचाप दुःख सहन करना
- ✧ **गूलर का फूल होना**–अदृश्य/ कभी दिखाई न देना
- ✧ **उड़ती चिड़िया पहचानना** – थोड़े से संकेत में सब कुछ समझ जाना
- ✧ **उलटी गंगा बहना** – परम्परा के विपरीत कार्य करना
- ✧ **एक आँख से देखना** – सभी को बराबर समझना
- ✧ **एक ही थैली के चट्टे** – बट्टे–सभी समान रूप से बुरे यक्ति
- ✧ **उलटे छूरे से मूँडना**–ठगना
- ✧ **ऐंठ कर चलना**–गर्व करना
- ✧ **आठ–आठ आँसू रोना**– बुरी तरह रोना/पछताना

शेखावाटी मिशन - 100

- ✧ **आसमान सिर पर उठाना**–अत्यधिक शोर करना
- ✧ **आस्तीन का साँप होना**–कपटी मित्र
- ✧ **आँधी के आम होना** – सस्ती वस्तु
- ✧ **कतर ब्योंत करना**–काँट छाँट करना
- ✧ **कोढ़ में खाज होना**– एक दुःख के साथ दूसरा दुःख होना
- ✧ **कान लगाना** – ध्यान देना
- ✧ **कान भरना** – चुगली करना
- ✧ **कान का कच्चा होना**– हर किसी के कहने पर भरोसा कर लेना
- ✧ **कान पर जूँ न रेंगना**– परवाह न करना/
- ✧ **कान खड़े होना** – चौकन्ना होना / सचेष्ट होना
- ✧ **कच्चा चिट्ठा खोलना**– किसी की कमजोरी को विस्तार से बताना
- ✧ **कलेजा थामना** – भय या आशंका से स्तम्भित होना
- ✧ **कलेजा मुँह में आना** – घबरा जाना
- ✧ **कलम तोड़ना** – मर्मस्पर्शी रचना करना/सुन्दर लेख लिखना
- ✧ **कलेजे पर पत्थर रखना**– संकट के समय धैर्य रखना
- ✧ **कौड़ी के मोल** – अत्यन्त सस्ता
- ✧ **कान में तेल डालना**– किसी बात पर ध्यान न देना
- ✧ **कूप मण्डूक होना** –अल्पज्ञ होना / सिमित ज्ञान
- ✧ **कन्नी काटना** – आँख बचाकर चले जाना / बहाना बनाना
- ✧ **खिचड़ी पकाना** – गुप्त योजना बनाना
- ✧ **खून सूखना**–बहुत भयभीत हो जाना
- ✧ **खेत रहना**–युद्ध में मारे जाना
- ✧ **खून का घूँट पीना**–क्रोध को मन में दबा लेना
- ✧ **कागज की नाव होना** – क्षण भंगुर
- ✧ **गर्दन पर छूरी फेरना**–किसी को नष्ट करने का कार्य करना
- ✧ **गाँठ बाधना**–स्थायी रूप से याद रखना
- ✧ **गाँठ पड़ना**– देश का स्थायी हो जाना
- ✧ **गाल बजाना** –डींग हाँकना/ अपनी प्रशंसा करना
- ✧ **गड़े मुर्दे उखाड़ना** – बीती बाते करना / छेड़ना
- ✧ **गंगा नहाना** – दायित्व पूर्ण करना
- ✧ **गुदड़ी का लाल होना** – गरीब किन्तु गुणवान
- ✧ **घड़ो पानी पड़ना** –लज्जित होना
- ✧ **घाट – घाट का पानी पीना** – विभिन्न स्थानों पर घूमकर अनुभव प्राप्त करना
- ✧ **घोड़े बेचकर सोना**–निश्चित होना
- ✧ **घी के दीपक जलाना**– खुशियाँ मनाना
- ✧ **घास काटना** – गुणवता का ध्यान रखे बिना शीघ्रता से काम निपटाना
- ✧ **घुरे के दिन फिरना**–कमजोर आदमी के अच्छे दिन आना
- ✧ **चाँदी का जूता मारना** – रिश्वत देना
- ✧ **चींटी के पर निकलना** – मरने के दिन निकट आना
- ✧ **चेहरे की हवाइयाँ उड़ जाना** –घबरा जाना
- ✧ **चौथ का चाँद होना**–शुभ होना/किसी के लिए अत्यंत शुभ
- ✧ **छठी का दूध याद आना**– बड़े संकट में पड़ना
- ✧ **छाती पर साँप लौटना**– ईर्ष्या होना
- ✧ **छक्के छूटना** – हिम्मत हार जाना
- ✧ **छप्पर फाड़ कर देना**–अचानक बहुत कुछ प्राप्त होना
- ✧ **जूतियाँ चाटना** – चापलूसी करना
- ✧ **जिन्दा/जीती मक्खी निगलना**– जान बूझ कर बेईमानी करना
- ✧ **छठे चौमास आना** –कभी – कभी आना
- ✧ **छाती ठोकना** – कठिन कार्य हेतु प्रतिज्ञा करना
- ✧ **छींकते नाक कटना** – छोटी बात पर चिढ़ना
- ✧ **जान हथेली पर रखना** – मृत्यु की परवाह न करना
- ✧ **जहर उगलना** – अपमान जनक बात कहना
- ✧ **जमीन आसमान एक करना**– सभी उपाय करना
- ✧ **जिल्लत उठाना** – अपमानित होना
- ✧ **झंडा गाड़ना** – अधिकार करना
- ✧ **टेढ़ी खीर होना** – कठिन काम होना
- ✧ **थाह लेना** – किसी गुप्त बात का भेद जानना
- ✧ **थूक कर चाटना** – अपनी बात से बदल जाना
- ✧ **टांग अड़ाना** – बाधा डालना
- ✧ **टोपी उछालना** – अपमानित करना
- ✧ **टका सा जवाब देना**– साफ मना कर देना
- ✧ **ठीकरा फोड़ना**– दोष लगाना
- ✧ **ढ़िढोरा पीटना** – प्रचार करना

शेखावाटी मिशन - 100

- ✧ **डेढ़ चावल की खीचड़ी पकाना** – सबसे अलग राय होना
- ✧ **डींग हाँकना** – व्यर्थ गप्पे लड़ाना
- ✧ **ठकुर सुहाती बाते करना** – चापलूसी करना
- ✧ **दर दर की ठोकरे खाना**– बहुत कष्ट उठाना
- ✧ **दाना पानी उठना**– आजीविका के अभाव में किसी स्थान से अलग होना
- ✧ **दो नावों पर पैर रखना**– दो पक्षों का सहारा लेना
- ✧ **दाहिना हाथ** –महत्वपूर्ण संबल
- ✧ **दिन फिरना**– अच्छा समय आना
- ✧ **तूती बोलना**– अत्यधिक प्रभाव होना
- ✧ **दाई से पेट छिपाना**– जानकार से बात छिपाना
- ✧ **दूध के दाँत न टूटना**– अनुभव हीन होना
- ✧ **दीया लेकर ढूंढना** – अच्छी तरक से खोजना
- ✧ **धरती पर पाँव न होना** – घमण्ड होना
- ✧ **निन्यानबे का फेर** – धन इकट्ठा करने की चिंता/ लोभ में पड़ना
- ✧ **नाक रगड़ना** – अपने स्वार्थ के लिए खुशामद करना
- ✧ **नाक का बाल होना** – अत्यधिक प्रिय होना
- ✧ **नस नस पहचानना** – किसी के व्यवहार को अच्छी तरह जानना
- ✧ **नजर करना**–भेंट करना / पेश करना
- ✧ **नहले पर दहला होना** – करारा जवाब देना
- ✧ **पापड़ बेलना** – बहुत कष्ट उठाना
- ✧ **पर हंडी ऊँची होना**– दूसरे की वस्तु बेहतर लगना
- ✧ **पेट में दाढ़ी होना** – बाल्यावस्था में समझदार होना
- ✧ **पैरों तले जमीन खिसकना**–आधार खो जाना
- ✧ **बल्लियाँ उछलना**– बहुत खुश होना
- ✧ **भिड़ का छता छेड़ना** –झगडालू व्यक्ति को छेड़ना
- ✧ **भीगी बिल्ली बनना**– मजबूरी में शान्त सहमा हुआ रहना
- ✧ **भैंस के आगे बीन बजाना** – मूर्ख के सामने बुद्धिमानी की बात करना
- ✧ **मुँह काला करना** – कलंकित / बदनाम करना
- ✧ **रोज कुआँ खोदना रोज पानी पीना** – रोज कमाकर जीवन निर्वाह करना
- ✧ **रंगा सियार होना**– धोखेबाजी /ढोंगी/उपर कुछ अंदर कुछ ओर होना / चालाक
- ✧ **लकीर का फकीर होना** – परम्परावादी होना
- ✧ **साँप सूँघना** – सहम जाना
- ✧ **सब्ज बाग दिखाना** – झूठे आश्वासन देना
- ✧ **साँच को आँच नहीं**– सच बोलने वाले को भय नहीं
- ✧ **सिक्का जमाना** – प्रभाव स्थापित करना
- ✧ **सूरज को दीपक दिखाना** – प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना
- ✧ **हथेली पर सरसों उगाना** – आवश्यक समय से पहले असंभव कार्य करना
- ✧ **हक्का बक्का रह जाना** – अचम्भे में पड़ना
- ✧ **हवा से बात करना**– बहुत तीव्र गति से चलना
- ✧ **हाथ का मैल होना** – तुच्छ /त्याज्य वस्तु
- ✧ **हाथ डालना** – किसी कार्य में दखल देना
- ✧ **हाथ धो बैठना** – किसी व्यक्ति /वस्तु को खो देना
- ✧ **बांछे खिल जाना** – आश्चर्य जनक हर्ष होना
- ✧ **लंगोटी में फाग खेलना** – सीमित साधनो में बड़ा काम करना
- ✧ **लोहा बजाना** – शस्त्रों से युद्ध करना
- ✧ **शैतान के कान कतरना** – बहुत चतुर होना
- ✧ **होठ चबाना** – क्रोध प्रकट होना
- ✧ **हाथ खीचना** – सहायता बंद कर देना/ साथ न देना
- ✧ **दमडी के तीन होना** – सस्ता होना
- ✧ **खाक छानना** – व्यर्थ कार्य करना/ मारा मारा फिरना
- ✧ **पासंग भी न होना** –तुलना में बहुत कम
- ✧ **नुक्ता चीनी करना** –दोष निकालना
- ✧ **बछिया का ताऊ होना** – महामूर्ख
- ✧ **थैली खोलना** – जी खोलकर खर्च करना
- ✧ **दो –दो हाथ करना**– अन्तिम निर्णय हेतु तैयार होना
- ✧ **ठन ठन गोपाल होना**– खाली होना / कुछ न होना
- ✧ **पानी पीकर जात पूछना** –काम निकलने के बाद सोचना
- ✧ **साँप को दूध पिलाना** – बुरे के साथ नेकी करना
- ✧ **नाक में दम करना** – बहुत परेशान करना

लोकोक्ति

✦ लोकोक्ति शब्द लोक+उक्ति के योग से बना है जिसका अर्थ होता है लोगों के द्वारा कही गयी बातें अर्थात् एक ऐसा कथन जो किसी सन्दर्भ विशेष में प्रयुक्त किया जाता है किन्तु आगे चलकर वही कथन किसी विशेष अर्थ को प्रकट करने लगता है तो उसे लोकोक्तिकहा जाता है लोकोक्ति अपने आप में एक पूणवाक्य होता है–

✧ **अध जल गगरी छलकत जाय**
→ अल्पज्ञ व्यक्ति ज्यादा इतराता है

✧ **अंधे की लकड़ी**
→ एकमात्र सहारा

✧ **आँख का अंधा नाम नयन सुख**
→ गुणों के विपरीत नाम

✧ **अंधे के आगे रोये अपने नयन खोये**
→ अपात्र व्यक्ति से मदद के लिए व्यर्थ प्रयास

✧ **अपना रख पराया चख**
→ अपना बचाकर दूसरों का माल हड़प जाना

✧ **अरहर की टट्टी गुजराती ताला**
→ सामान्य वस्तु की रक्षा में अधिक खर्च

✧ **अशर्फियों की लूट और कोयले पर मुहर**
→ कीमती वस्तुओं की परवाह न करके तुच्छ वस्तुओं की रक्षा करना

✧ **अंधा क्या चाहे दो आँखे**
→ इच्छित वस्तु की प्राप्ति होना

✧ **आगे नाथ ना पीछे पगहा**
→ पूर्णतः अनियन्त्रित

✧ **अटका बनिया देवे उधार**
→ मजबूर व्यक्ति अनचाहा कार्य भी करता है

✧ **आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास**
→ बड़े उदेश्य की शुरूआत कर छोटे कार्य में लग जाना

✧ **आठ वार नौ त्योहार**
→ मौजमस्ती से जीवन जीना

✧ **तीन कनौजिए तेरह चूल्हे**
→ व्यर्थ की नुक्ता चीनी

✧ **ऊँट किस करवट बैठता है**
→ परिणाम की अनिश्चितता

✧ **घड़ी में घर जले नौ घड़ी भद्रा**
→ समय बीतने पर सहायतामिलने पर कार्य का महत्व नहीं रहता

✧ **जिन खोजा तिन पाईया गहरे पानी पैठ**
→ कठिन परिश्रम से सफलता मिलती है

✧ **छछुंदर के सिर चमेली का तेल**
→ अनुपयुक्त वस्तुओं का साथ / बैमेल मिश्रण

✧ **साँप छुछंदर की गति / भाई गति साँप छुछंदर केरी**
→ दुविधा में पड़ना

✧ **एक तो करेला दूजा नीम चढ़ा**
→ एकाधिक दोष होनौ

✧ **ओछे की प्रीत बालू की भींत**
→ नीच व्यक्ति की मिश्रता क्षणिक होती है

✧ **कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमति ने कुनबा जोड़ा**
→ अलग–अलग स्वभाव वालों को एकत्र करना/ इधर–उधर की सामग्री जुटाकर किसी निकृष्ट वस्तु का निर्माण करना

✧ **खग जाने ही खग की भाषा**
→ मूर्ख ही मूर्ख व्यक्ति की बात समझना है

✧ **कौवों के कोसे ढ़ीर नहीं भरते**
→ बुरे आदमी के कहने पर अच्छे आदमी का अहित / बुरा नहीं होता

✧ **गंगा गये गंगादास जमुना गये जमुनादास**
→ अवसर वादी/सिद्धान्तहीन व्यक्ति

शेखावाटी मिशन - 100

✧ **गवाह चुस्त मुददई सुस्त**
→ स्वयं की अपेक्षा दुसरो का उसके लिए अधिक प्रयत्नशील होना

✧ **घर में नहीं दाने बुढ़िया चली भुनाने**
→ झूठा दिखावा करना

✧ **तन पर नहीं लता पान खाये अलवता**
→ झूठा दिखावा करना

✧ **नोखी नाइन बाँस का लहंगा**
→ झूठा दिखावा करना

✧ **चिराग तले अँधेरा**
→ दूसरो को उपदेश देना स्वयं अज्ञान में रहना

✧ **चील के घोसलें में माँस कहाँ**
→ भूखे के घर में भोजन मिलना असंभव है

✧ **चट मंगनी पट ब्याह**
→ तुरन्त कार्य सम्पादित होना

✧ **चाँद को भी ग्रहण लगता है**
→ भले आदमियो को भी कष्ट सहने पड़ते है

✧ **चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढे जाते**
→ अल्पसाधनों से बड़ा काम संभव नहीं होता

✧ **छोटा मुँह बड़ी बात**
→ सामर्थ्य से अधिक डींग हाँकना

✧ **जंगल में मोर नाचा किसने देखा**
→ गुणों का प्रदर्शन उपयुक्त स्थान पर ही होना चाहिए

✧ **टके का सौदा नौ टके विदाई**
→ साधारण वस्तु हेतु अधिक खर्च

✧ **दमड़ी की हाँडी भी ठोक बजाकर लेते है**
→ पैसों की छोटी चीज भी परखकर लेते है

✧ **जो गुड़ खाये सो कान छिदाये**
→ लाभ के लालच में कष्ट सहना

✧ **नक्कार खाने में तूती की आवाज**
→ अराजकता में सुनवाई न होना / बड़ों के बीच छोटों की न सुनना

✧ **पढ़े फारसी बेचे हुए तेल देखो ये विधना (कुदरत) का खेल**
→ शिक्षित होते हुए भी दुर्भाग्य से निम्न कार्य करना

✧ **यादें से फरजी भयो टेढ़ो टेढ़ो जाय**
→ छोटा आदमी बड़े पद पर पहुँच कर इतराने (घमण्ड़ करने) लग जाता है

✧ **बावन तोले पाव रत्ती**
→ बिल्कुल ठीक या सही – सही हिसाब

✧ **मन चंगा तो कठौती में गंगा**
→ मन पवित्र होने पर घर में ही तीर्थ होता है

✧ **कौआ चला हंस की चाल भूल गया अपनी भी चाल**
→ दूसरों के अनुकरण से अपने रीति–रिवाज भूल जाना

✧ **लिखित सुधाकर लिखिगा राहु**
→ अच्छी उपलब्धि वाले व्यक्ति को दुर्योग से बुरा परिणाम भुगतना पड़त है

✧ **घर आये नाग ना पूजे बाँबी पूजन जाय**
→ अवसर का लाभ न उठाकर उसकी खोज में जाना

✧ **जादू वही जो सिर चढ़कर बोले**
→ उपाय वही जो अच्छा/ कारगर हो

✧ **जैसी बहे बहार पीठ तब तैसी दीजै**
→ समयनुसार कार्य करना

✧ **तिल देखो तिल की धार देखों**
→ परिणाम की प्रतीक्षा करना

✧ **दैव दैव आलसी पुकारा**
→ आलसी व्यक्ति भाग्यवादी होता है।

✧ **नीम हकीम खतरे जान**
→ आधे ज्ञान वाला अनुभवहीन व्यक्ति अधिक खतरनाक होता है

✧ **मानो तो देव नहीं मानो तो पत्थर**
→ विश्वास फलदायी होता है

✧ **शक्करखोर को शक्कर मिल ही जाती है**
→ जरूरतमंद को उसकी वस्तु मिल ही जाती है

शेखावाटी मिशन - 100

✧ **षठे षाठ्यम समाचरेत**

→ दुष्टों के साथ दुष्टता का व्यवहार करना चाहिए

✧ **मुफ्त का चन्दन घिस मेरे नन्दन**

→ मुफ्त में मिली वस्तु का दुरूपयोग

✧ **होनहार बिरवान के होते चिकने पात**

→ महान् व्यक्तियों के लक्षण बचपन में ही नजर आ जाते है।

✧ **तीन में न तेरह में मृदंग बजावे डेरे में**

→ किसी महत्व का न होना

✧ **हंसा थे सो उड़ि गये कागो भये दिवान**

→ अच्छे लोग नष्ट होना

✧ **कुतिया चोरन मिल गई पहरा किसका देय**

→ अपनो द्वारा ही धोखा देना

✧ **आदमी जानिए से सोना जानिए कसे**

→ व्यवहार से व्यक्ति का पत्ता चलता है।

शेखावाटी मिशन – 100

मॉडल प्रश्न - प्रत्र

माध्यमिक परीक्षा-2025

शेखावाटी मिशन-100

विषय - हिन्दी

कक्षा -10

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :-

1. **परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांकन अनिवार्यतः लिखे।**

2. **सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य है।**

3. **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखे।**

4. **जिन प्रश्नों में आंतरिक खण्ड है, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखे।**

5. **प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्व लिखे।**

खण्ड - अ

1. **निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए-** **[15]**

(i) कर्म के आधार पर पर क्रिया कितने भेद माने जाते हैं।

(क) एक (ख) दो (ग) तीन (घ) चार ( )

(ii) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द कहलाते हैं।

(क) सर्वनाम (ख) कारक (ग) विशेषण (घ) क्रिया ( )

(iii) 'पण्डिताइन' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है-

(क) इन (ख) आइन (ग) आनी (घ) नी ( )

(iv) 'स्वागत' शब्द का सही सन्धि विच्छेद है-

(अ) सु+आगत (ब) स्व+आगत (स) स+वागत (द) सु+गत ( )

(v) 'भ्रमरगीत' की भाषा है-

(अ) अवधी (ब) संस्कृति (स) उर्दू (द) ब्रज ( )

(vi) फागुन मास में कौनसी ऋतु का आगमन होता है?

(अ) वसन्त (ब) वर्षा (स) ग्रीष्म (द) शरद ( )

(vii) जयशंकर प्रसाद की रचना कौनसी है-

(अ) आसूँ (ब) गीतिका (स) परिमल (द) नये पत्ते ( )

(viii) परशुराम ने शिव धनुष तोड़ने वाले को किसके समान अपना शत्रु माना है?

(अ) रावण (ब) कंस (स) सहस्त्रबाहु (द) यम ( )

(ix) हालदार साहब किस सोच का आदमी है?

(अ) सकारात्मक (ब) नकारात्मक (स) विकारात्मक (द) पुरातनवादी ( )

शेखावाटी मिशन - 100

(x) मनु भण्डारी का जन्म कहाँ हुआ था?

(अ) भानुपरा (म. प्र.) (ब) हरिपुरा (म.प्र.) (स) जोधपुर (राज.) (द) उत्तर प्रदेश ( )

(xi) यशपाल का जेल में किससे परिचय हुआ?

(अ) महात्मा गांधी (ब) नेहरू जी से (स) भगतसिंह एवं सुखदेव से (द) इन्दिरा गांधी से ( )

(xii) मानव संस्कृति है-

(अ) विभाज्य (ब) अविभाज्य (स) विनाशकारी (द) प्रलयंकारी ( )

(xiii) शिवपूजन सहाय को उनके पिताजी क्या कहकर पुकारते थे?

(अ) शंकरनाथ (ब) भोलानाथ (स) रामदास (द) कमलनाथ ( )

(xix) गैंगटाक (गंतोक) का अर्थ क्या है?

(अ) जलाशय (ब) चोटी (स) पहाड़ (द) पठार ( )

(xv) मैं विज्ञान का विद्यार्थी हूँ? विद्यार्थी शब्द का सन्धि-विच्छेद है-

(अ) विद्या + अर्थी (ब) विद्या + आर्थी (स) विध + आर्थी (द) कोई नहीं

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- [4]

(i) पर्वत, नदी, नगर, पक्षी फूल आदि उदाहरण.......... संज्ञा के है।

(ii) जो शब्दांश शब्द के आरम्भ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन उत्पन्न कर देते है वे........ कहलाते हैं।

(iii) जिस समास में पहला पद संख्यावचक होता है, वहाँ .... समास होता है।

(iv) घोड़ा तेज दौड़ता है, वाक्य में .... विशेषण है।

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए। [6]

देश प्रेम क्या है? प्रेम ही तो है। इस प्रेम का आलम्बन क्या है? सारा देश अर्थात् मनुष्य, पशु, पक्षी, नाले, वन-पर्वत सहित सारी भूमि। यह प्रेम-किस प्रकार का है? यह साहचर्य प्रेम है जिसके मध्य हम रहते हैं जिन्हें हम बराबर आँखों से देखते हैं, जिनकी बातें बराबर सुनते है जिनका और हमारा हर घड़ी का साथ रहता है, जिनके सानिध्य का हमें अभ्यास हो जाता है उनके प्रति लोभ या राग हो सकता है। देश-प्रेम यदि वास्तव में अन्त:करण का कोई भाव है तो यही हो सकता है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है-

(क) देश-प्रेम (ख) प्रशु-प्रेम (ग) भक्ति-प्रेम (घ) वन-प्रेम ( )

(ii) देश-प्रेम शब्द में कौनसा समास है?

(क) बहुब्रिहि समास (ख) तत्पुरूष समास (ग) द्विगु समास (घ) अव्ययीभाव समास( )

(iii) देश प्रेम किस कोटि का माना जाता है-

(क) उच्च कोटि (ख) बैराग्य कोटि (ग) निम्न कोटि (घ) साह-चर्यगत कोटि( )

(iii) देश-प्रेम वास्तव में किस भाव का माना जाता है-

(क) अन्त: करण का भाव (ख) बहि: भाव

(ग) अनुचित भाव (घ) बाध्य भाव ( )

शेखावाटी मिशन - 100

(iv) सानिध्य से क्या उत्पन्न होता है-

(क) ईर्ष्या (ख) क्रोध (ग) लालच (घ) लोभ व राग ( )

4. अपठित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए। [6]

दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उत्तर रही है
वह संध्या-सुन्दरी परी सी
धीरे-धीरे-धीरे ।
तिमिरांचल में चंचलता, का नहीं कहीं आभास
मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर
किन्तु जरा गम्भीर नहीं है उनके हास-विलास।
हँसता है तो केवल तारा एक
गुंथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से
हृदय राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।

(i) प्रस्तुत काव्यांश में किस समय का वर्णन है-

(क) सुबह (ख) दोपहर (ग) संध्या (घ) रात्रि ( )

(ii) संध्या-सुन्दरी किसके समान प्रतीत हो रही थी-

(क) नारी-सी (ख) परी-सी (ग) गुड़िया-सी (घ) कामिनी-सी ( )

(iii) 'हँसता है केवल तारा एक' तारा कहाँ हँसता है-

(क) साड़ी पर (ख) बालों पर (ग) हाथों पर (घ) माथे पर ( )

(iv) दिवसावसान का 'समय' पंक्ति के सन्दर्भ में 'अवसान' का अर्थ है-

(क) प्रारम्भ होना (ख) नष्ट होना (ग) शाम होना (घ) समाप्त होना ( )

(v) उपर्युक्त काव्यांश का शीर्षक है-

(क) संध्या-सुन्दरी (ख) अस्तांचल (ग) कामिनी (घ) दिवसावसान ( )

(iv) संध्या-सुन्दरी कहाँ से उत्तर रही है-

(क) अस्तांचल से (ख) मेघमय आसमान से (ग) पर्वत घाटियों से (घ) गगन मण्डल से ( )

खण्ड-ब

निम्नलिखित लघुत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए। [14]

5. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की काशी को क्या देन है?

6. लेखक ने संस्कृति और असंस्कृति किसे कहा है?

7. हिरोशिमा पर कविता लिखते समय लेखक की क्या मन: स्थिति थी?

8. कौनसा सौन्दर्य लेखिका के लिये असह्य था? साना-साना हाथ जोड़ी...... पाठ के आधार पर सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।

9. 'देखो, यह गागर रीति' गागर रीति से कवि का क्या अभिप्राय है?

शेखावाटी मिशन - 100

10. 'संगतकार' कविता का मूल भाव लिखिए।

11. 'आँख का तारा' मुहावरे का अर्थ एवं वाक्य में प्रयोग लिखिए।

खण्ड-स

12. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पुछे गये प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए। [4]**

बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्ती-जवानी-जिन्दगी सब कुछ होम कर देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिये बिकने के मौके ढूँढती है दुखी हो गए पंद्रह दिन बाद उसी कस्बे से फिर गुजरे। कस्बे में घुसने से पहले ख्याल आया कि कस्बे की दृश्य स्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिस्थापित होगी लेकिन सुभाष की आँखो पर चश्मा नहीं होगा।.......... क्योंकि मास्टर बनाना भुल गया। .... और कैप्टन मर गया। सोचा, वहा रूकेंगे भी नहीं, पान भी नहीं खायेंगे, मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं।

(i) **लेखक दुःखी क्यों हो गया?**

(ii) **लेखक आज वहाँ रूकना क्यों नहीं चाहता था?**

(iii) **हालदार साहब कितने दिनों बाद कस्बे से गुजरे?**

(iv) **सुभाष की मुर्ति की आँखों पर चश्मा क्यों नहीं था?**

अथवा

उस समय तक हमारे परिवार में लड़की के विवाह के लिये अनिवार्य योग्यता थी उम्र में सोलह वर्ष शिक्षा में मैट्रिक। सन् 44 में सुशीला ने वह योग्यता प्राप्त कर ली और शादी करके कोलकाता चली गई। दोनों भाई भी आगे की पढ़ाई के लिये बाहर चले गये। इन लोगों की छत्र-छाया हटते ही पहली बार मुझे नये सिरे से अपने वजूद का अहसास हुआ। पिताजी का ध्यान पहली बार मुझ पर केन्द्रित हुआ। लड़कियों को जिस उम्र में स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुघड़ गृहिणी और कुशल पाक-शास्त्री बनाने के नुस्खे सिखाये जाते थे पिताजी चाहते थे कि मैं रसोई घर से दूर ही रहूँ रसोई को वे भटियारखाना कहते थे। और उनके हिसाब से वहाँ रहना अपनी क्षमता और प्रतिभा को भट्टी में झोंकना था।

(i) **लेखिका ने लड़की के विवाह की कौनसी अनिवार्य योग्यता बताई है?**

(ii) **सुशीला ने कौनसी योग्यता प्राप्त कर ली थी?**

(iii) **लेखिका को अपने वजूद का अहसास कब हुआ?**

(iv) **पिताजी रसोई घर को क्या कहते थे?**

13. **प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए। [4]**

फसल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह
नदियो के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण धर्म है
रूपान्तर है सूरज की किरणों का

शेखावाटी मिशन - 100

सिमटा हुआ संकोच है,

हवा की थिरकन का।

(i) प्रस्तुत पद्यांश में कवि किसके विषय में कह रहा है?

(ii) फसल किसके हाथों के स्पर्श की महिमा है?

(iii) 'रूपान्तर है सूरज की किरणों का' पंक्ति का आशय लिखिए।

(iv) फसल के किन आवश्यक तत्वों का कवि ने पद्यांश में वर्ण किया है?

अथवा

बादल गरजो।

घेर घेर घोर गगन, धारा घर ओ।

ललित ललित, काले घुघॅराले,

बाल कल्पना के से पाले,

विद्युत-छबि उर में , कवि नवजीन पाले

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो

बादल गरजो।

(i) प्रस्तुत कविता में बादल की तुलना किससे दी गई?

(ii) किसके हृदय में विद्युत छवि है?

(iii) कवि को नवजीन देने वाला क्यों बताया है?

(iv) कवि और बादल में क्या समानता बताई गई है?

14. **लेखिका पड़ोस कल्चर विहीन समाज को संकुचित, असहाय एवं असुरक्षित क्यों मानती है? [3]**

अथवा

बालगोबिन भगत के व्यक्तित्व एवं उनकी वेशभूषा को अपने शब्दों में लिखिए।

15. **गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, गोपियों के वाक्चातुर्य की विशेषतायें लिखिए। [3]**

अथवा

आत्मकथ्य कविता में प्रसाद जी ने जिस मार्मिक अभिव्यक्ति के साथ जीवन के अभावपक्ष एवं यथार्थ का वर्णन किया है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

खण्ड-द

16. **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के बहुआयामी कृतित्व एवं व्यक्तित्व के विषय में लिखिए। [3]**

अथवा

लेखिका मन्नु भण्डारी के व्यतित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

शेखावाटी मिशन - 100

17. 'नौबतखाने में इबादत' पाठ में किसके जीवन चरित्र पर प्रकाश डाल गया है। सविस्तार बताइये। [4]

अथवा

'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है, वह अपने बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है? लिखिए।

18. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए। [6]

1. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता-

(i) प्रस्तावना (ii) नैतिक शिक्षा का स्वरूप

(iii) नैतिक शिक्षा की उपयोगिता (iv) नैतिक शिक्षा की आवश्यकता (v) उपसंहार

2. राजस्थान में गहराता जल संकट-

(i) प्रस्तावना (ii) जल संकट की स्थिति

(iii) जल संकट के कारण (iv) जल संकट निवारण हेतु उपाय (v) उपसंहार

3. साइबर अपराध के बढ़ते कदम -

(i) प्रस्तावना (ii) साइबर अपराध क्या है?

(iii) साइबर अपराध रोकने हेतु सरकार द्वारा किये गये प्रयास (iv) साइबर अपराद रोकने हेतु साझाव

(v) उपसंहार

4. पर्यावरण प्रदूषण : कारण और निवारण

(i) प्रस्तावना (ii) पर्यावरण प्रदूषण की समस्या

(iii) प्रर्यावरण प्रदूषण के दुष्प्रभाव (कुप्रभाव) (iv) पर्यावरण प्रदुषूण निवारण के उपाय (v) उपसंहार

19. स्वयं को अशोक कुमार मानते हुये अपने प्रियमित्र को जन्म-दिवस के उपलक्ष में बधाई पत्र लिखिए। [4]

अथवा

स्वयं को रा.उ.मा.वि. सीकर का छात्र मानते हुये अपने प्रधानाचार्य को शैक्षिक भ्रमण का आयोजन करने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

20. रेडक्रास सोसाइटी की ओर से रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है इस सम्बन्ध में सोसायटी की ओर से एक विज्ञापन तैयार कीजिए। [4]

अथवा

स्वास्थ्य विभाग की ओर से डेंगु रोग के नियन्त्रण हेतु चेतावनी संबंधी एक विज्ञापन 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन का प्रारूप तैयार कीजिए।

शेखावाटी मिशन - 100